# सामाजिक संघठन में मानवीय मूल्यों का महत्व

डॉ. संजय खरे
सह-प्राध्यापक, शासकीय स्वशासी
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो सभी लोग खुशहाल हो यही मानवीय मूल्य का आधार है। मान मूल्यों का मुख्य आधार समाज कल्याण की भावना है अर्थात् हमारे द्वारा बनाए गए। मूल्य मूल्यों का मुख्य आ इस बात पर केन्द्रित होना चाहिए कि इनसे लागों का कल्याण हो।

मानवीय मुल्यों में नैतिकता, आध्यात्मिकता व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश होना आवश्यक ''मूल्य'' सैद्धान्तिक एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण की अपेक्षा नैतिकता एवं उपयोगवादी होना आवश्यक है।

**मूल्य क्या है?**

मूल्य महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान होते है क्योंकि इनके द्वारा किसी न किसी लक्ष्य की पूर्ती होती है। व्यक्ति के सामने सदैव कुछ वस्तुए या कार्य महत्वपूर्ण होते है, मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ होती हैं, जिन्हें वह विभि साधनों के द्वारा पूरा करना चाहता है अतः यह साधन ही मूल्य बन जाते हैं।

मूल्य शब्द का तात्पर्य किसी भौतिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण से है जिसके द्वारा मनु किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य को प्राप्त करता है।

मूल्य प्रत्येक व्यक्ति के अपने आंतरिक भाव होते है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को परिलक्षित करते हैं।

किसी भी मनुष्य के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान रहता है, इन्हीं के आधार पर अच्छा, बुरा, सही गलत की परख की जाती है। मूल्य व्यक्ति और समाज के व्यवहारों को नियंत्रित करके सही मार्ग की ओर ले जा का कार्य व निर्देशन करते हैं हमारे मूल्य न केवल हमारे मानसिक तनाव व संघर्षों को शाँत करते है, बल्कि उन आंतरिक सामंजस्य स्थापित करके हमारे अंदर उच्च आदर्श आयामो की स्थापना करते हैं। डॉ. राधा कमल मुखर्जी ने अपनी पुस्तक The social structural of values में मूल्यों के संबंध में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए है मुखर्जी सम्पूर्ण सामाजिक संगठन और व्यवस्था का आधार मूल्यों को मानते है। वे मूल्यों, व्यक्ति ओर समाज को परस्प संवंधित मानते है, उनका मानना है कि पारस्परिक आदान-प्रदान से ही व्यक्ति पूर्ण बनता है। मुखर्जी के मतानुसा व्यक्ति मूल्यों का सृजन भी करता है ओर उन्हें पूर्ण भी करता है। व्यक्ति मूल्यों का उद्गम स्त्रोत ही नहीं वरन् व गो मूल्य निर्धारण भी करता है जो कि समूहों और संस्थाओं की सामान्य कार्य प्रणाली में अन्तर्व्यैक्तित्व लक्ष्यों, संबंध त और व्यवहारों में समाहित हैं।

मूल्य मानव समूह और व्यक्तियों के द्वारा प्राकृतिक और सामाजिक संसार में सामंजस्य करने के उपकरण है। मूल्य ऐसे प्रतिमानों को कहते है जो मनुष्यों की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मार्गदर्शन करते हैं। ये सामाजिक अस्तित्व के केन्द्रीय तत्व कहे जाते है, इनकी रक्षा हेतु समूह के सदस्य हर सम्भव त्याग करने को तत्पर रहते है। मूल्य एक प्रकार से सामूहिक लक्ष्य होते है जिनके प्रति सदस्यों की स्वाभाविक आस्था होती है।

मुखर्जी का मानना है कि मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ तथा लक्ष्य है, जिनका आन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है।

डॉ. मुखर्जी का मानना है कि व्यक्तित्व के निर्माण में मूल्यों का विशेष महत्व होता है। मूल्य व्यक्तित्व को प्रभावित करते है, कोई व्यक्ति समाज में कितनी आसानी से सामंजस्य कर पाएगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसके व्यक्तित्व में मूल्यों का प्रवेश कितना व्यवस्थित रहा है। प्रत्येक समाज को जीवित रहने के लिए नियमित रूप से व्यक्तित्व के सर्वोच्च मूल्यों की पूर्णता का प्रयास किया जाना चाहिए। इसके अभाव में सभ्यता का शीघ्र अंत होता है।

मूल्यों के महत्व का उल्लेख करते हुए मुखर्जी कहते है कि सामाजिक विज्ञानों के लिए मूल्यों का वही महत्व है जो भौतिकशास्त्र के लिए गति और गुरूत्वाकर्षण का है तथा शरीर विज्ञान के लिए पाचन क्रिया एवं रक्त संचार का। मानव की आधारभूत इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की संतुष्टि करने में मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान है।

## मूल्यों का विकास

मूल्यों के विकास में परिवार, समाज, शैक्षणिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

मूल्यों के विकास में परिवार पहली सीढ़ी होती है, जिस पर चढ़कर मानवीयता के लक्ष्य को पाना सरल होता है। 6 वर्ष की आयु एक ऐसा पायदान है जब बच्चा दूसरों के आचरण से सबसे ज्यादा प्रभावित होता है इसलिए प्राथमिक स्तर पर मूल्य इसी उम्र में निर्धारित होते हैं।

प्रशिक्षण, प्रोत्साहन, निंदा, दण्ड ऐसे उपकरण है, जिनसे यह मूल्य विकसित किए जा सकते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मानवीय मूल्यों का विकास केवल बाल्य शैशव अवस्था में होता है, ऐसा नहीं है? क्योंकि हम यह जानते है कि मानव में समाजिकरण की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है एवं समाज में व्यक्ति निरंतर सीखता रहता है हमें अपने जीवन में समय के साथ-साथ चलने एवं हर नये नवाचार को अंगीकार करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए। व्यक्ति को समय के अनुसार चलना एवं बदलाव को स्वीकार करना आना चाहिए।

हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि जब इस सृष्टि में कुछ भी स्थाई नहीं है तो फिर हमारे विचार, राय, सिद्धान्त क्यों नहीं बदल सकते।

अक्सर देखने में आता है कि लोग जिद पर अड़ जाते हैं और अपनी राय बदलने को तैयार नहीं होते कुछ लोग, तो राय बदलने को बेहद बुरा मानते है एवं सोचते हैं कि लोग क्या कहेंगे कि व्यक्ति अपनी बात से पलट गया, जबकि ऐसा कई वार होता है कि बचपन में जिन चीजों से आप घृणा करते थे, बड़े होकर आप उनसे प्यार करने

लग जाते है। आपकी किसी व्यक्ति के बारे में बहुत अच्छी या खराब राय थी, परन्तु एक-दो घटनाओं के बाद आ राय बदल गई आप अपनी राय और सोच को अंगद के पाँव की तरह जकड़कर मत रखिए इससे आपका वि रूक जाएगा। हमें बदलाव को आने देना चाहिये। व्यक्ति को लचर होना चाहिए। डायनासौर लचीला नहीं था इस प्रकृति के बदलाव को संभाल नहीं पाया, जबकि चींटी छोटे होते हुए भी हर बदलाव में खुद को बचा ले गई। हवा तेज हो तो झुक जाने में कोई बुराई नहीं है, जब हवा तेज नहीं होगी तो फिर से तनकर खड़े हो जाइए।

कहना का तात्पर्य है कि हमारे मूल्यों में लचीला पन होना आवश्यक है ताकि हम समय, स्थान के अ बदलाव कर अपने लक्ष्य को पा सकें।

हमारे देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने कितनी अच्छी बात कही कि विस्तारवादी दृष्टि की धारणा जिस किसी की भी हो एक समय के हिसाब से ठीक रही होगी पर वर्तमान में हमे विकासवादी दृष्टि को अपनाना होगा।

सामाजिक एवं मानवीय मूल्य में सैद्धान्तिक दृष्टिकोण की अपेक्षा प्रयोगवादी दृष्टिकोण का महत्व ज होना चाहिए।

महावीर स्वामी ने भी कहा है कि, ''व्यक्ति की आत्मा में जो नैतिकता, महानता व शक्ति है, व भगवान है।''

महावीर स्वामी ने मानवीय मूल्यों के विकास में तीन चीजों को महत्व दिया है - 1. सम्यक ज्ञान 2. सम्य दर्शन 3. सम्यक चरित्र

गौतम बुद्ध ने भी नैतिक मूयों के उत्थान में अष्टांग मार्ग को महत्वपूर्ण माना है।

गौतम बुद्ध का कहना है कि, ''क्रोध पर दया और बुराई पर अच्छाई से विजय प्राप्त की जा सकती है घृणा को घृणा से नहीं, अपितु प्रेम से परास्त किया जा सकता है।

शास्त्रों में पाँच प्रकार के नैतिक मूल्य बताए हैं - 1. सत्य 2. धर्म 3. शांति 4. अहिंसा 5. प्रेम

**प्रेम -**

ऐसा गुण है जो प्रसारित होता है, जिसमें सबका भला होता है, सबका मंगल हो, जैसे किसी कुण्ड या न के शांत जल में जब पत्थर फेंकते है तो पानी की तरंगें धीरे-धीरे सम्पूर्ण जल में फैल जाती है।

**शांति -**

शांति मन की वह स्थिति होती है, जिसमें मन या मतिष्क में कोई अशांति न हो मन आंदोलित न हो

**अंहिसा -**

किसी व्यक्ति के साथ हिंसा नहीं करना चाहिए, हिंसा का तात्पर्य शारीरिक हिंसा ही नहीं अपितु मन, क वचन से भी हिंसा न हो।

**धर्म -**

धर्म वह है, जिसको सबने आवरण किया हो, अर्थात् जो सवके अनुकूल हो, जिसमें सभी का भला हो। संसार व प्रकृति में सभी का अपना धर्म है और सभी अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं, यदि समाज में लोग अपने-अपने धर्म का पालन नहीं करेंगे तो समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाएगी।

**सत्य -**

सत्य वह है, जिसमें सच हो शुद्धता हो, स्वार्थ का स्थान नहीं हो वह सत्य है। इन मूल्यों को हमे अपना आदर्श मानते हुए अपने आचरण में उतारना चाहिए एवं अंतःमन में यह भाव हो कि मूल्यों का अंतिम लक्ष्य मानव का कल्याण है और यह भाव ही समाज कल्याण में सहायक होगा।

## संदर्भ

1. गुप्ता, एम.एल. - समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
2. जानसन - सामाजिक मूल्यों का महत्व, समाजशास्त्र, पृ. 62